पवन
कॉमिक्स
मूल्य 7.00
हिंसक
हॉरर
Scan & editing
by
Rahul Dubey

पवन कॉमिक्स

नये सैट के नये मनोरंजक कॉमिक्स

- ☐ विक्रान्त और भूकम्पिया (डायजेस्ट) 16.00
- ☐ सूर्यपुत्र और खजूरा का ज़हर 7.00
- ☐ हिंसक (हॉरर) 7.00
- ☐ जुर्म का दुश्मन (रहस्य-रोमांच) 7.00
- ☐ कानून का पंजा (रहस्य-रोमांच) 7.00
- ☐ माला का अपमान 7.00

सम्पादक : देवकी नन्दन शर्मा
© समस्त कापी राईट प्रकाशकाधीन
प्रकाशक : पवन पॉकेट बुक्स, दाईवाड़ा, नई सड़क, दिल्ली-110006

सम्पादक : देवकीनन्दन शर्मा
कथानक : टी॰ आर. सिप्पी
चित्रांकन : धीरज वर्मा
मैं तुम्हें जिन्दा नहीं छोडूंगा हत्यारों।
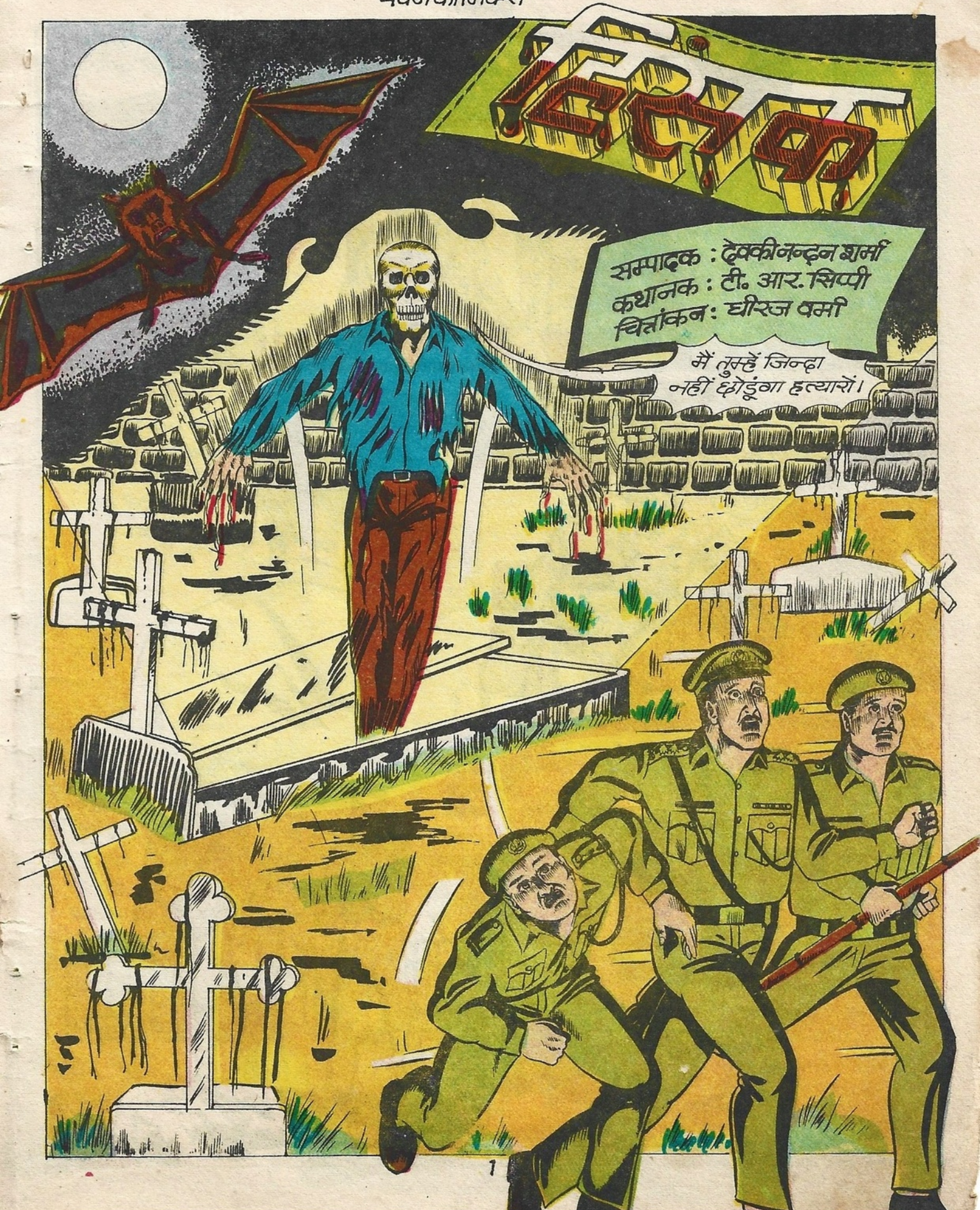
रात के ग्यारह बजे राजनगर पुलिस स्टेशन में-
यस... यस... ठीक है सर, आपका काम हो जाएगा।
हां, तुम क्या कह रहे थे कब्रिस्तान वाले रोड पर कोई कार किसी को टक्कर मार गई?
हां, ई० साहब और एक सभ्य नागरिक होने के नाते मैं आपको सूचना देने आ पहुंचा।
ई० तुरन्त दो हवलदारों के साथ घटना स्थल की ओर चल पड़ा-
वैसे तुम्हारा नाम क्या है?
अमर... अमर सिन्हा...
POLICE
घटना स्थल...
यह रही लाश साहब!
अब जरा यह भी बताने का कष्ट कर दो कि तुमने इसकी हत्या क्यों की!
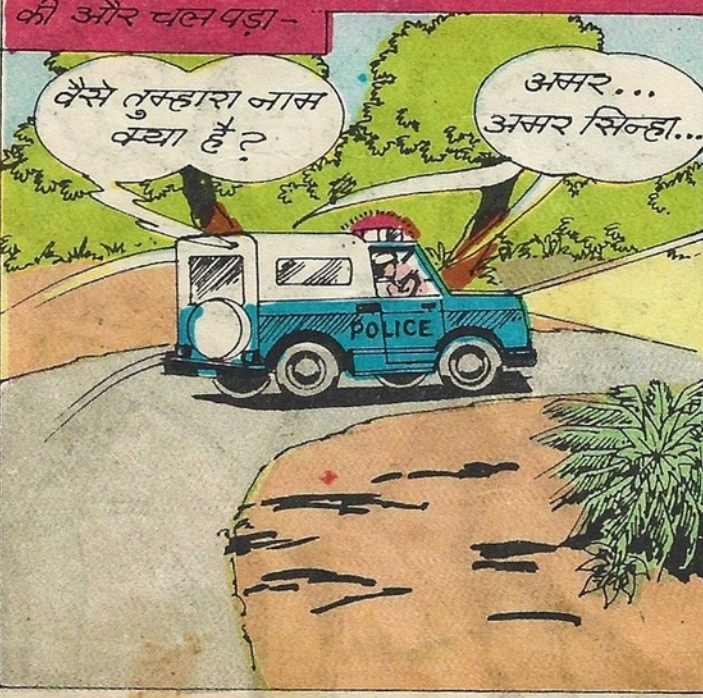
अचानक चीखा अमर ...

नहीं... यह खून मैंने नहीं किया...

मैं जानता हूं...पर चूंकि तूने यह एक्सीडेंट होते देखा है इसलिए तुझे भी मौत को गले लगाना पड़ेगा!

Scan & editing by Rahul Dubey

पकड़ो उसे वह भाग रहा है।
जी साहब!
यह ई० तो मेरी ही जान लेना चाहता है!

तभी ई० अजीत के रिवाल्वर ने शोले उगले -
धाँय
धाँय

जो असर के कंधों में समा गए।
आह! आह!

लेकिन उसकी रफ्तार में कोई अंतर नहीं आया!
रुक जाओ!
धांय धांय

मुझे शीघ्र ही कहीं छिप जाना चाहिए।

यह कब्र ठीक रहेगी... वर्ना वो मुझे मार डालेगा...

उफ... सर अंधेरे में न जाने कहां गायब हो गया...

यहीं किसी कब्र के पीछे छिपा होगा... ढूंढो उसे और मारकर यहीं जमीन में गाड़ दो...

तभी पान्डे के हलक से चीख निकली-
चर्रररsss
यह...यह कब्र खुल रही है... माई गॉड!
फिर कब्र में से जो निकला वह... खून जमा देने के लिए काफी था!
गर्ररर्रई
नहींsss साहब!
साहब पान्डे की चीख!
चलो उधर!
वह दृश्य देख रोंगटे खड़े हो गए अजीत के!
आहss
साहब वह अमर ही है! भूत बन गया वह!
?
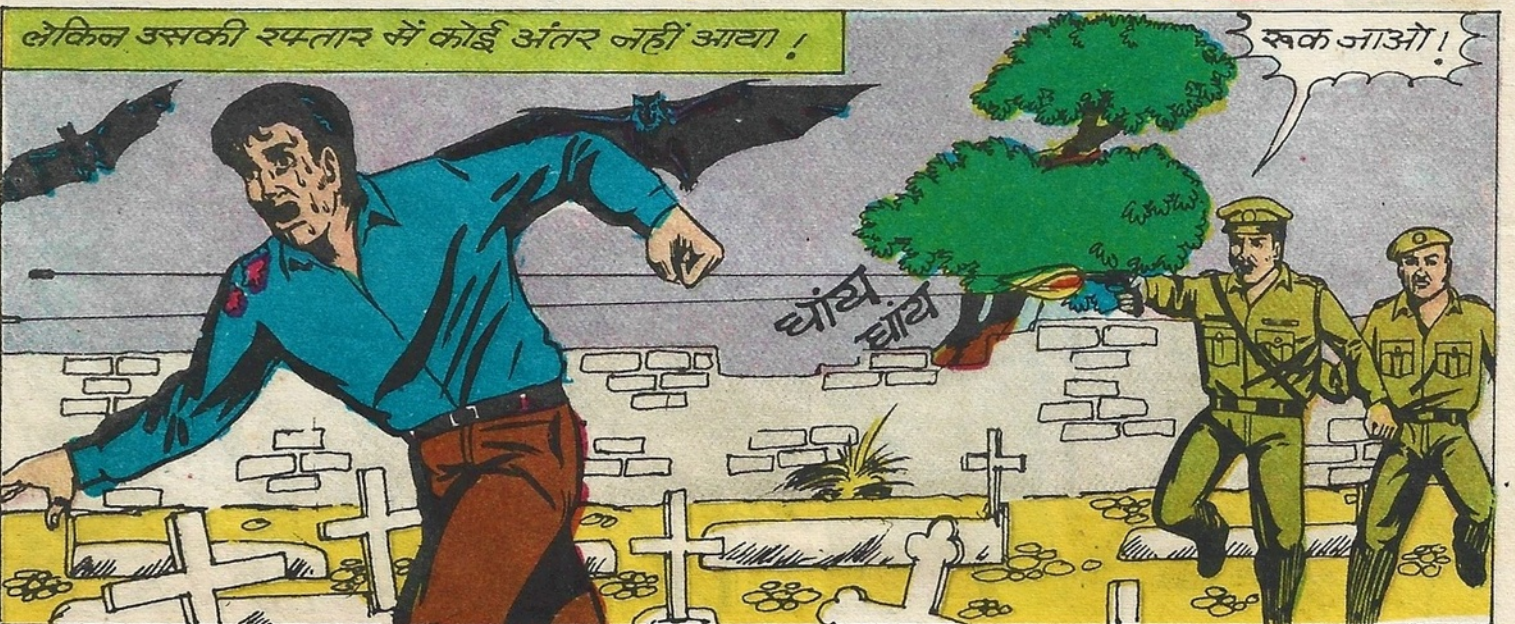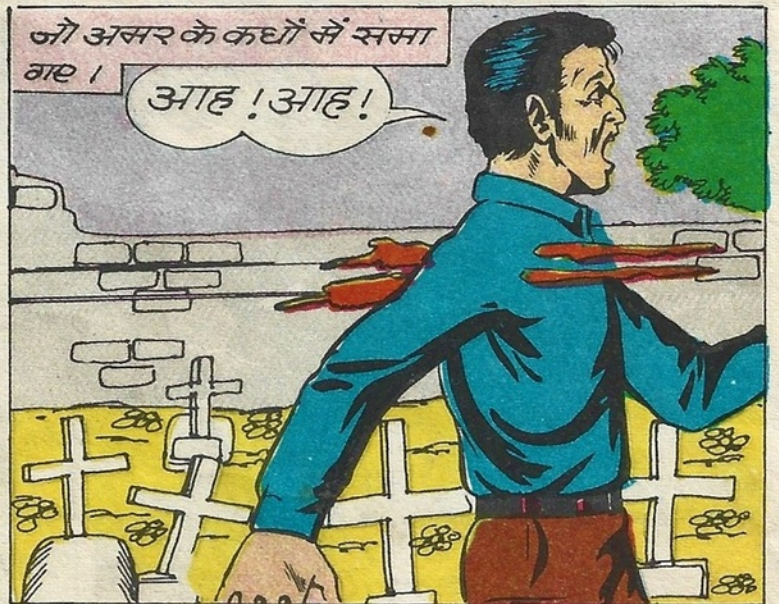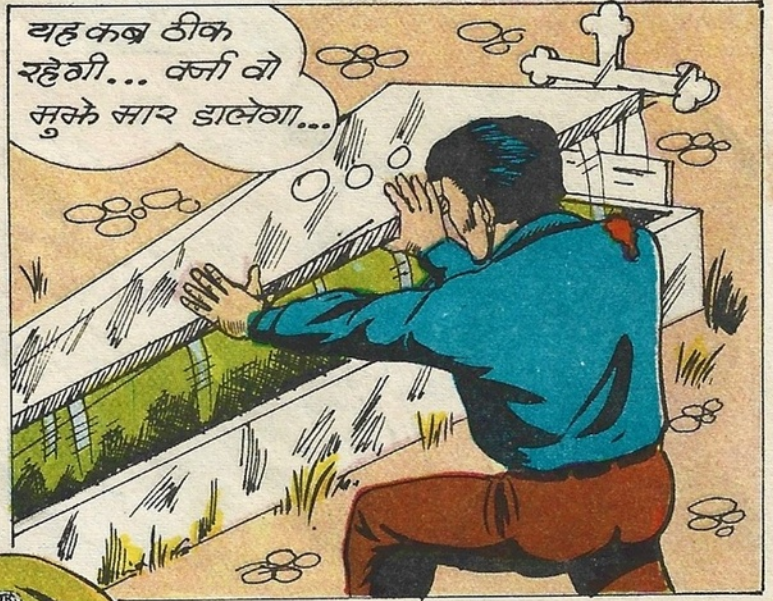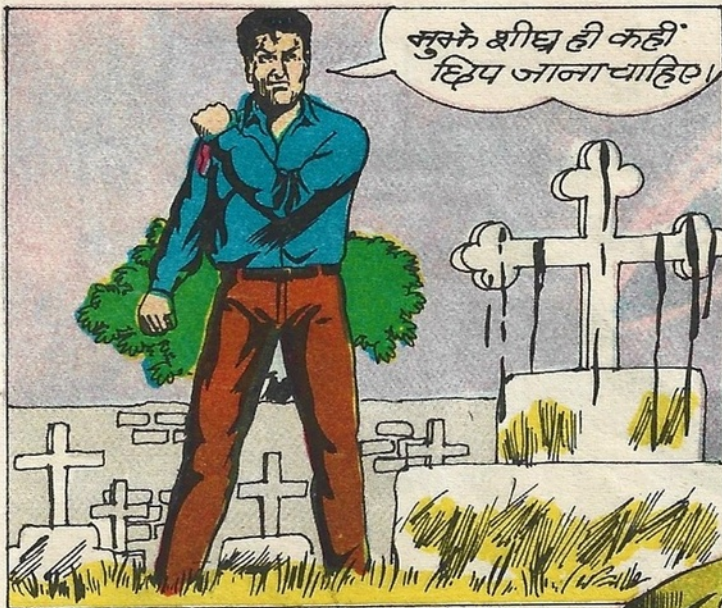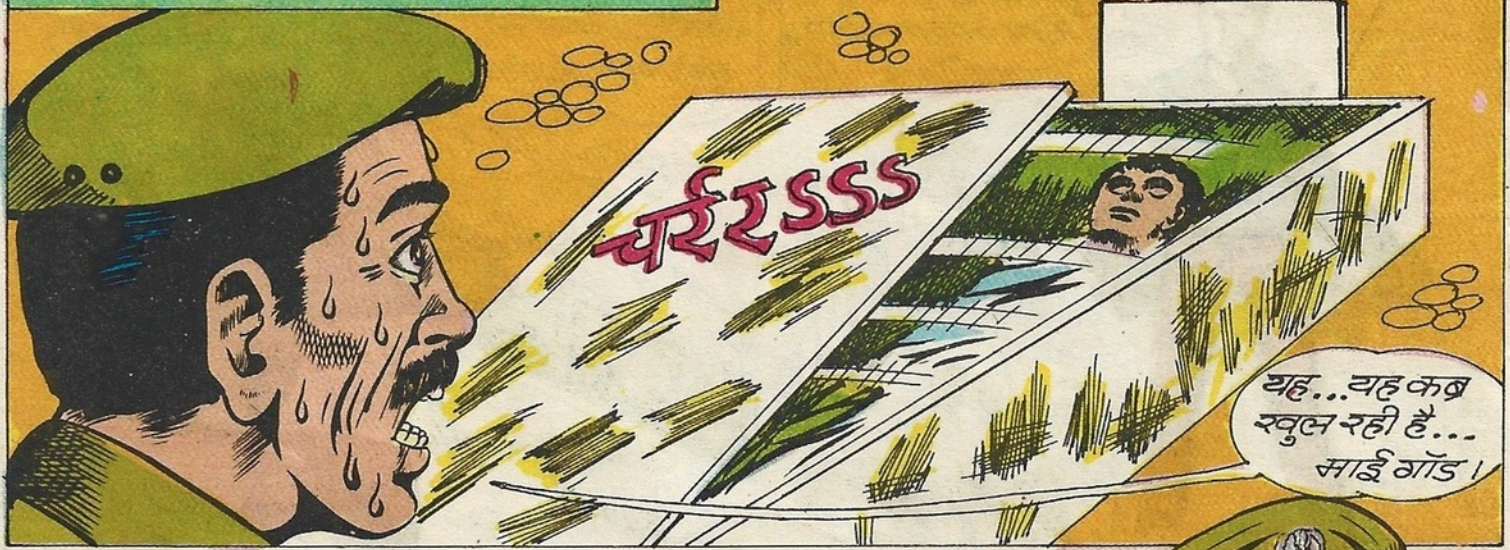
मैं तुम्हें जिन्दा नहीं छोड़ूंगा हत्यारों!

धाँय धाँय धाँय

अब मुझ पर तुम्हारी गोली का कोई असर नहीं होगा भ्रष्ट इंस्पेक्टर!

रिवाल्वर पिघल गई!

ई० अजीत ने झटका देकर हाथ छुड़ाया!

दोनों आनन फानन से जीप में सवार हुए और जीप तोप के गोले की भांति दौड़ पड़ी।
और तेज रामसिंह, जितनी जल्दी हो सके यहां से खिसक लो!
Scan & editing by Rahul Dubey

आधे घंटे बाद ...
मंत्रीजी हमने आपका काम तो कर दिया पर आपसे एक्सीडेंट कैसे हो गया?
मेरे से नहीं मेरे ड्राईवर धर्मपाल से... हम दोनों आज एक पार्टी में से कुछ ज्यादा ही पीकर निकल पड़े!

धर्मपाल और तेज चलाओ... हम घर पहुंच कर जल्दी सोना चाहते हैं!

धर्मपाल ने कार की स्पीड बढ़ा दी!
साहब नशे की वजह से मैं इससे तेज नहीं चला सकता!
और तेज...

तभी...
धर्मपाल... संभालो!
DL-4C-1

मगर वही हुआ जिसका डर था!
आह ऽऽऽऽ
धड़ाक

वह घटनास्थल पर ही दम तोड़ बैठा!
साहब अब क्या होगा?
होगा क्या कुछ नहीं... तू देख किसी ने हमें एक्सीडेंट करते तो नहीं देख लिया!

देखो आस पास तो कोई नजर नहीं आ रहा!
नहीं सर!

फिर हमने दोबारा कार दौड़ा ली!

फिर तुम्हें फोन किया !
अजीत... अगर कोई उस एक्सीडेंट के विषय में जानकारी देने आए तो... समझ गए न !
यस... यस सर आपका काम हो जाएगा।

अब बोलो तुम क्या चाहते हो ईनाम में !
सर... जिस तरह सिफारिश करके आपने ई० बनवाया है उसी तरह कल सुबह तक मेरा ट्रांसफर करवा दीजिए !
क्यूं

जवाब में ई० ने सारी घटना कह दी -
ओह... तो वह मरकर प्रेत बन गया... खैर चलो तुम्हारा सुबह तक ट्रांसफर हो जाएगा ! खुश !
और साहब दया करके मेरा भी करवा दीजिए ट्रांसफर ई० साहब के साथ ही !
ठीक है, ठीक है तुम दोनों सुबह रामनगर थाने में ड्यूटी ज्वाईन कर लेना !

दो दिन बाद मंत्री विनोद भारती के यहां -
पिताजी, पिताजी !
क्या बात है अशोक तुम लोग चीख क्यूं रहे हो ?

पिताजी... छोटा भाई अमित खून की उल्टी कर रहा है।
क्या...?

गोले की भांति विनोद भारती कमरे में घुसे-
अमित की मां तुम क्या कर रही हो अभी तक डाक्टर को फोन किया?
डाक्टर माथुर आते ही होंगे मैंने फोन कर दिया था।
पिच
ढुलक!

बेटा घबराओ मत... अभी डाक्टर साहब आते होंगे।
पिताजी रात मैंने सपना देखा... बड़ा भयकर...

क्या... कैसा सपना बेटा।
मैंने देखा...

"मैं कब्रिस्तान में खड़ा हूं... और सैकड़ो प्रेत मेरे आस पास मंडरा रहे हैं"
हा हा हा।
?
ही...ही... ही...

उन... उन प्रेतों ने मुझे पकड़कर एक दलदल में डूबो दिया
नहींऽऽऽ
धपाक

और जब मैं दलदल से बाहर निकला तो मैं भी प्रेत बन गया-
तुम लोगों ने मुझे भी अपने जैसा बना दिया...
हा हा हा ! तू मेरी मौत का बदला लेगा...!
ही ही ही हा हा हा!

पिताजी कहते है सुबह के सपने सच होते है...
कुछ नहीं होगा बेटा यह तेरा बहम है... भूल जा वह सपना!

तभी डाक्टर ने प्रवेश किया-
आइए डा० साहब देखिए अमित को न जाने क्या हो गया है!

नब्ज देखते ही-
जल्दी कीजिए डाक्टर साहब!
उफ... इसे तो खून देना होगा... शुक्र है खून की एक बोतल मैं साथ ले आया।

Scan & editing by Rahul Dubey

कौन... कौन था... वो क्या कोई...

फिर अज्ञात आशंका से शंकित हो डाक्टर ने लपक कर अमित का चैकअप किया...
ओह माई गाड!
क्या हुआ डाक्टर?
भौं... भौं... भौं ऽऽऽऽ

किसी ने इसके शरीर में पागल कुत्ते का खून चढ़ा दिया है...। यह अब रैबीज का मरीज है किसी भी क्षण यह पागल कुत्ते के समान किसी को भी काट सकता है!

सुनकर उपस्थित लोगों के दिल दहल गए!
क्याऽऽ नहींऽऽ
मेरा बेटा!
भौं भौं... मम्मी मेरे पास आओ!

अचानक!
क्याऊं, मूऽऽऽ भौं भौं भौं...

रैबीज के लक्षण तेजी से –
भौं... भैया... मम्मी भौं... भौं... मेरे पास आओ...!

दृष्टि गोचर होने लगे।
मूंऽऽऽ ऊं ऽऽऽऽऽ भौंऽऽऽऽ भौंऽऽऽऽ
चिर्र
चर्रररर

खूखांर कुत्ते की भांति वह झपटा!
भों भों भों!
बचो, भागो! इसका नाखून भी अगर हमें लग गया तो हम भी रेबीज के मरीज बन जाएंगे।
बेटा अमित SSS
अशोक, आरती बाहर चलो सब।
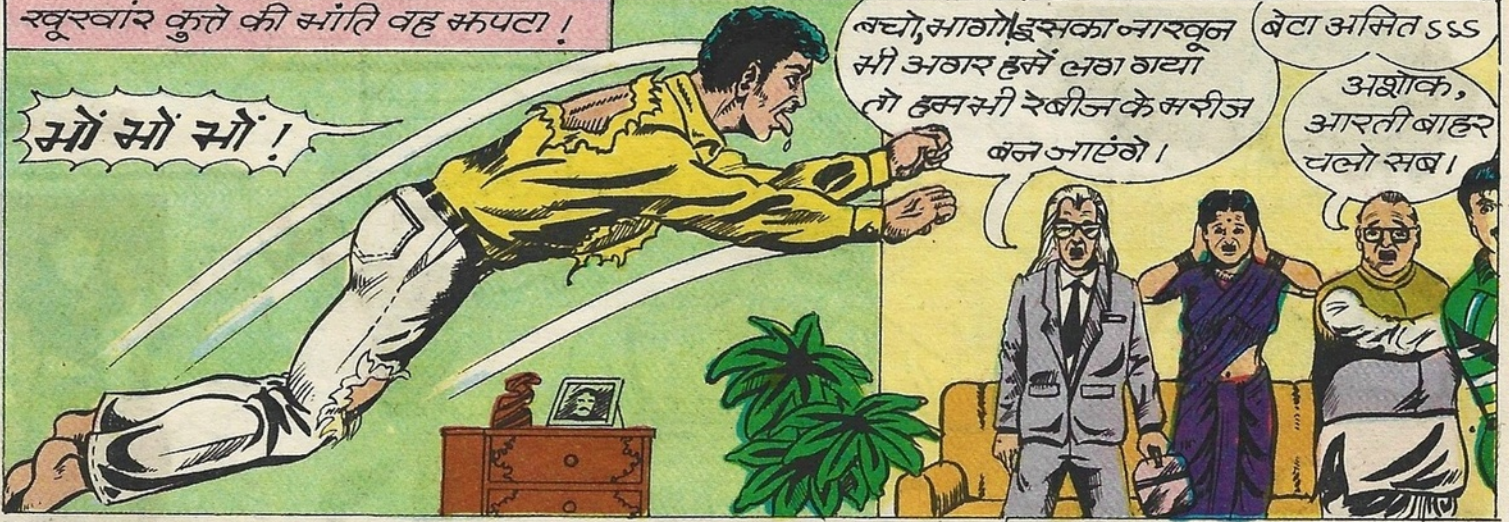
बाहर निकलकर तेजी से दरवाजा बंद कर दिया-
डाक्टर साहब उसे बचा लो!
सॉरी उसकी रगों में पागल कुत्ते का खून दौड़ रहा है...

और बीमारी एकाएक उस स्टेज पर पहुंच गई, जहां आदमी की मौत सुनिश्चित है... मैं तो चला यहां से!
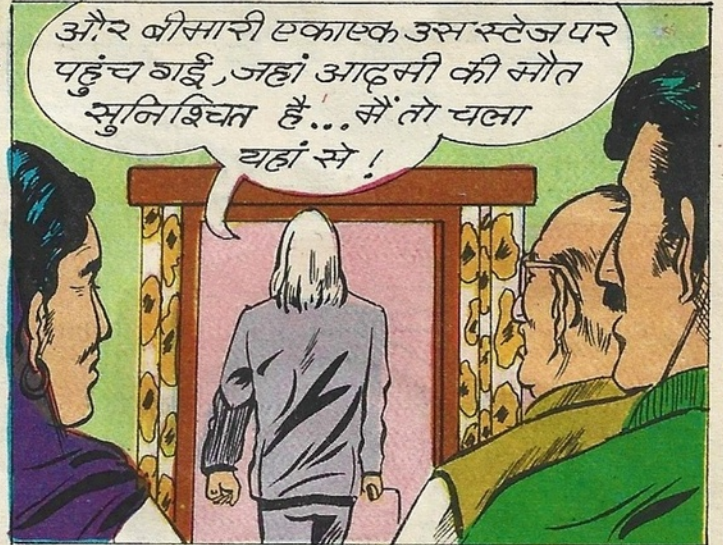
तभी अमित खिड़की से कूदा-
मुं SSSS मुं
छनाक

और!
अशोक उसे रोको... वह भाग रहा है।
बेटा SSS
मुं SS मुं मुं
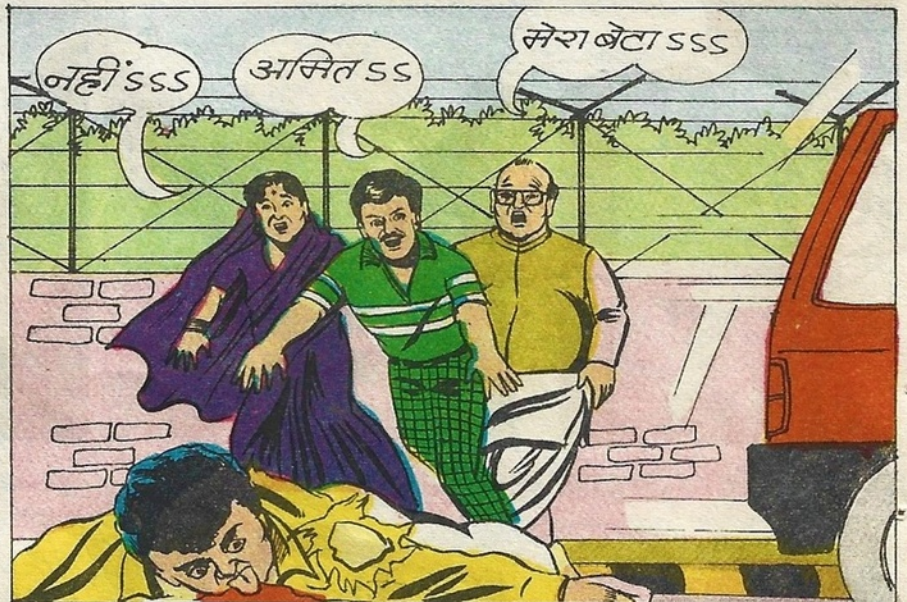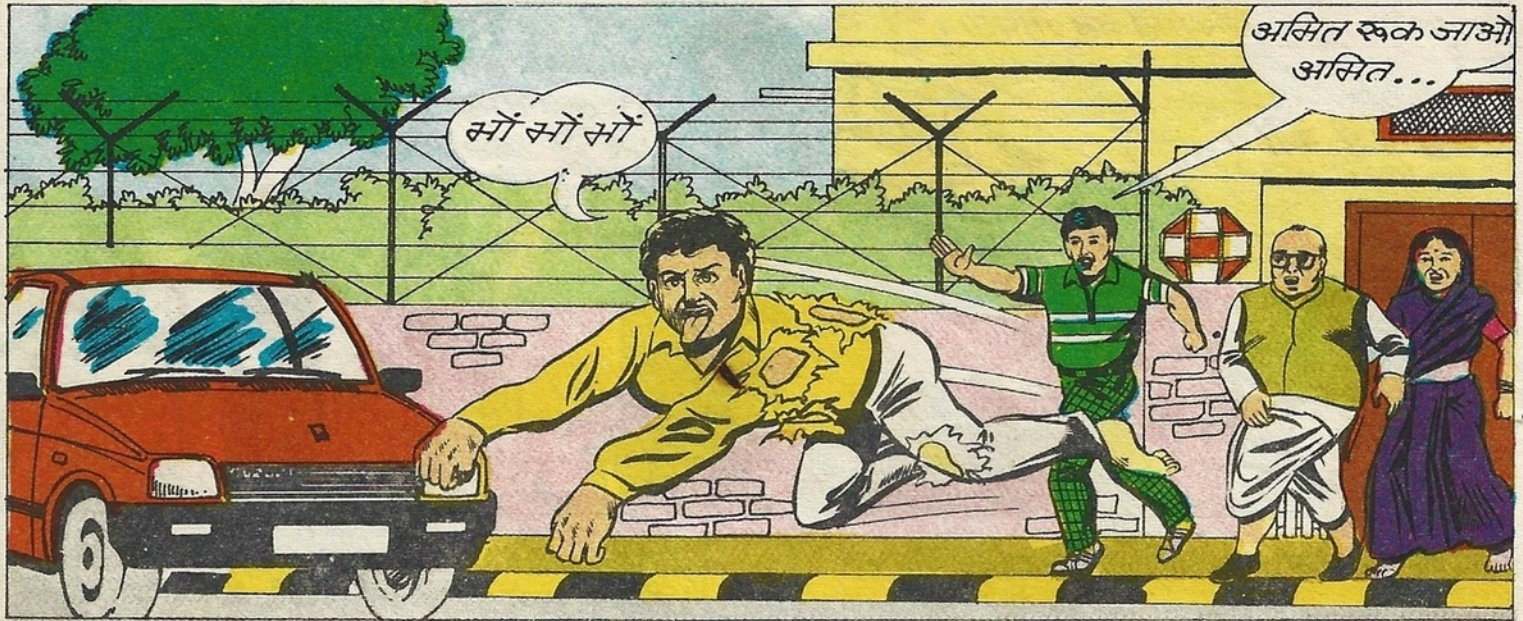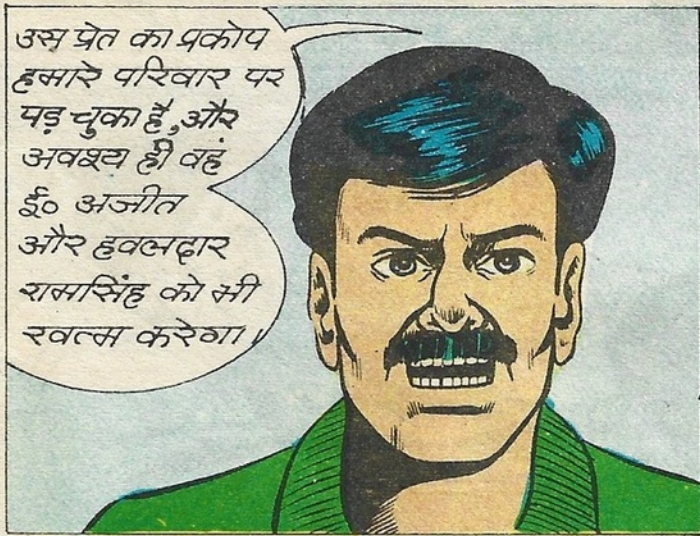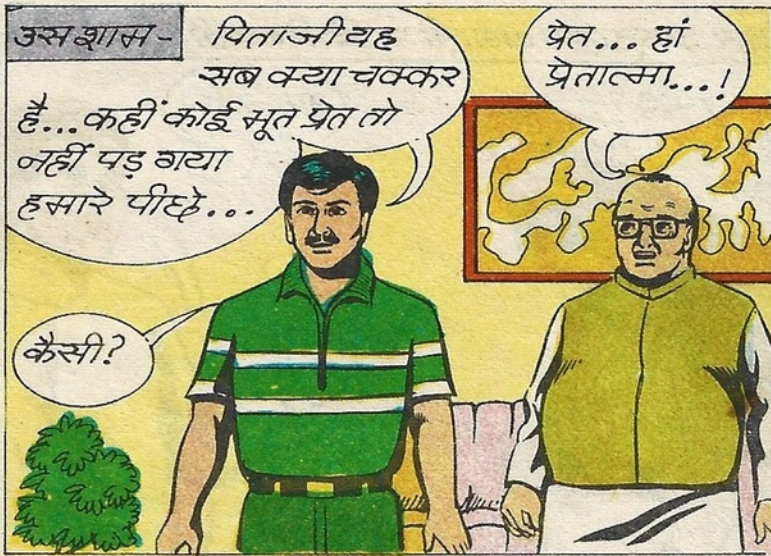
भौं भौं भौं
अमित रूक जाओ अमित...
अगले पल किसी आवारा कुत्ते की मौत मरा अमित...
धड़ाक
भौंSSSSS
नहीं SSS
अमित SS
मेरा बेटा SSS
अशोक ने कार चालक की तलाश में अंदर नजर डाली तो हैरत से चीख पड़ा!
पिताजी कार में कोई नहीं है।
क्या... तो कार अपने आप चल रही थी... ओह माई गॉड!

उस शाम -
पिताजी यह सब क्या चक्कर है... कहीं कोई भूत प्रेत तो नहीं पड़ गया हमारे पीछे...
प्रेत... हां प्रेतात्मा...!
कैसी?

जवाब में संजी ने संक्षेप में बीते दिनों की घटना बताई।
ओह माई गॉड ... पिताजी आपने यह सब क्यूं किया?
इन बातों को छोड़ो बेटा और सोचो आगे क्या करना है।

उस प्रेत का प्रकोप हमारे परिवार पर पड़ चुका है, और अवश्य ही वह इं० अजीत और हवलदार रामसिंह को भी खत्म करेगा।

शीघ्र ही उन्होंने रामनगर फोन मिलाया...
इं० अजीत या हवलदार रामसिंह है।
नहीं साहब आज उनकी छुट्टी है।

उस रात... हवलदार रामसिंह के घर!
आह ... मेरा सिर फटा जा रहा है, नाथ।
मैं अभी पानी की पट्टियां तेरे माथे पर रखता हूं।

ज्यों ही गीली पट्टी रखने को हाथ बढ़ाया चौंक पड़ा रामसिंह।
स... स... सावित्री...

Scan & editing by Rahul Dubey

सुबह जब ई० को रामसिंह की मौत की खबर मिली !
ओह माई गॉड कितने वीभत्स तरीके से मरे हैं दोनों पति पत्नी ।
साहब मुझे तो यह किसी इन्सान का नहीं बल्कि किसी भूत प्रेत का कार्य लगता है!
भूत प्रेत... नहीं अमर की आत्मा ने ही तो कहीं...!
और अन्दर तक सिहर उठा अजीत
मुझे तुरन्त मंत्रीजी से मिलना चाहिए।
तीन घंटे बाद !
क्या... आपके पुत्र अमित की हत्या हो गई।
हां, यह हत्या ही कहलाई जाएगी, प्रेत द्वारा की गई हत्या... अमित और रामसिंह की हत्या उसी अमर की आत्मा ने की है।
पास ही खड़ा ड्राईवर धर्मपाल, मिमिया उठा-
साहब फिर तो अगली बारी मेरी होगी क्योंकि मैं ही उस वक्त कार ड्राइव कर रहा था !
नहीं अब हमें ऐसा कोई उपाय सोचना चाहिए जिससे हमें इस आत्मा से छुटकारा मिल सके।

मेरा एक मित्र डाक्टर शाकाल वैज्ञानिकी पद्धति से प्लेन चिट पर आत्माएं बुलाने में माहिर है, अशोक तुम शाकाल को बुलाने तुरन्त चले जाओ।
ठीक है पिताजी!

अशोक को गए अभी कुछ ही क्षण बीते थे कि!
धुनाक
यह आवाजें कैसी आ रही हैं?
धुनाक
धुनाक

भारती, अजीत तथा धर्मपाल चीते की भांति अंदर भागे।

भारती!

भड़ाक
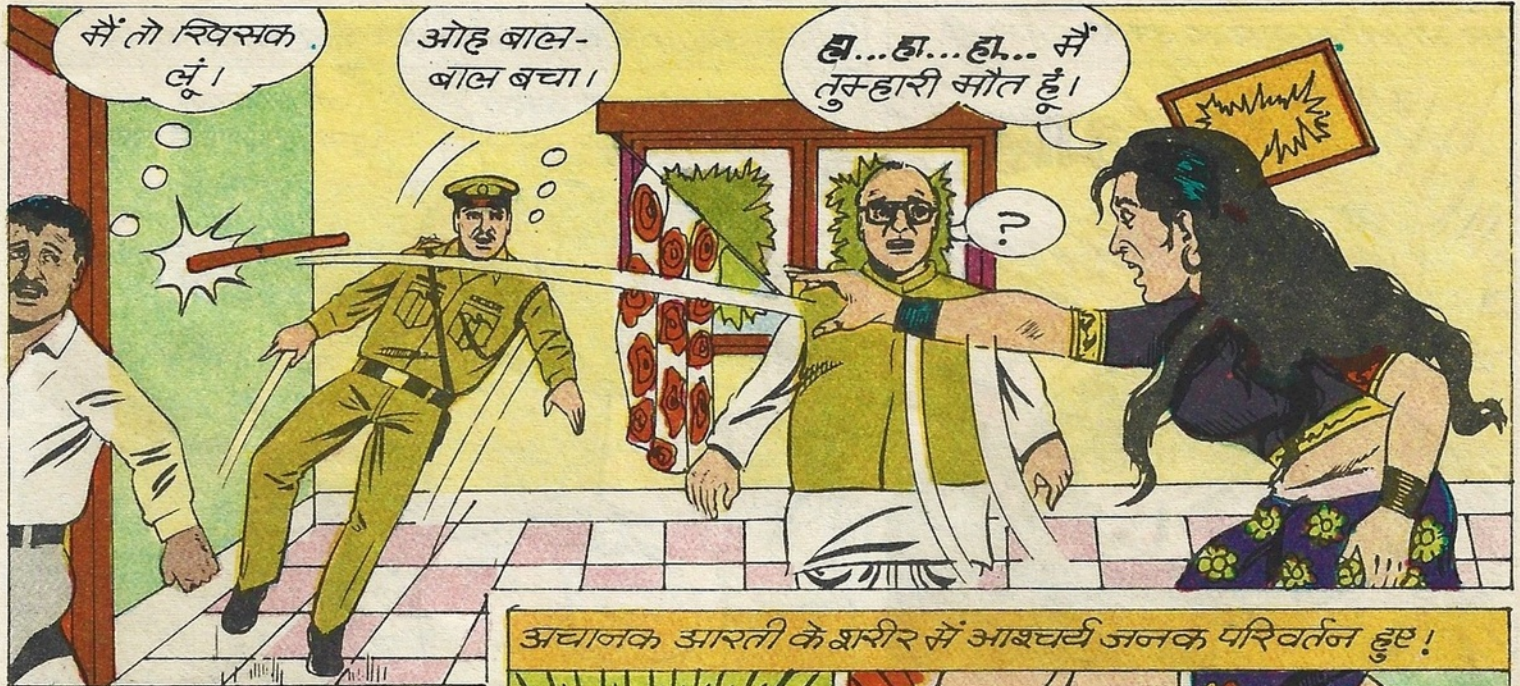
मैं तो खिसक लूं।
ओह बाल-बाल बचा।
हा...हा...हा... मैं तुम्हारी मौत हूं।
?
अचानक आरती के शरीर में आश्चर्य जनक परिवर्तन हुए!
सर इन पर तो उसी प्रेत शक्ति ने कब्जा कर रखा है।
आरती का भयानक रूप देख सब के दिल धाड़ धाड़ कर बजने लगे।
यह तो चुड़ैल बन गई मंत्री जी बचो-भागो!
आरती!
गुर्रsssर्र!

पर आरती भाग पाता उससे पहले ही...
आह!

अपना अंत करीब देखकर चीत्कार ही पड़ा था वह!
ई... इंस्पेक्टर गोली चलाओ... गुई ररई
जो कहता हूं वही करो इस वक्त यह सिर्फ चुड़ैल है।
पर सर यह आपकी पत्नी है!
गुर ररर्र

अजीत ने विद्युत गति से रिवाल्वर निकाला और -
क्याऊं क्याऊं
धाँय
धाँय धाँय

अगले पल आरती की लाश फर्श पर पड़ी थी -
उफ नहीं... आरती इतनी भयानक हो उठेगी, मैंने सपने में भी नहीं सोचा था!
सर...अब क्या होगा?
तभी गोली की आवाज सुन मंत्री के सुरक्षा गार्ड भीतर आए!
क्या हुआ सर!
कुछ नहीं, तुम सब अपना काम करो जाओ यहां से!

Scan & editing by Rahul Dubey

शाकाल का कंकाल मेरी तरफ बढ़ा!

"मैं तोप से छूटे गोले की भांति बाहर भागा"!
हा हा हा, कोई नहीं बचेगा।
उफ नहीं, शाकाल भी प्रेतशक्ति का शिकार हो गया!
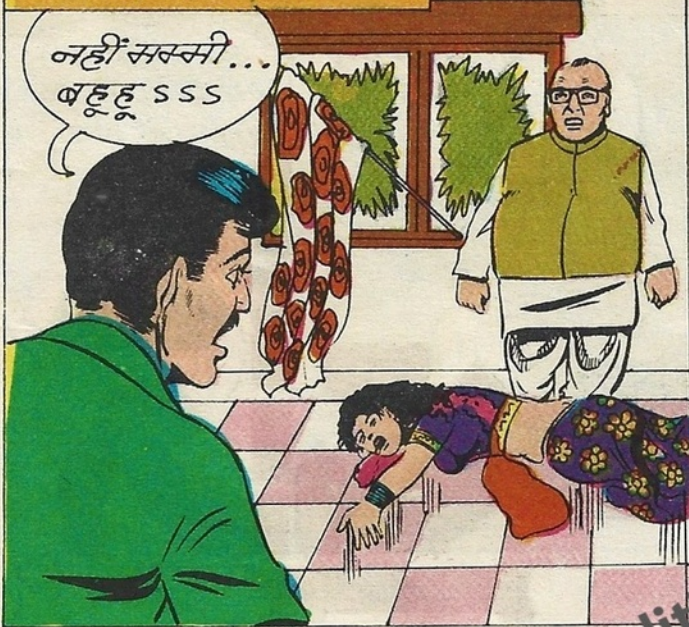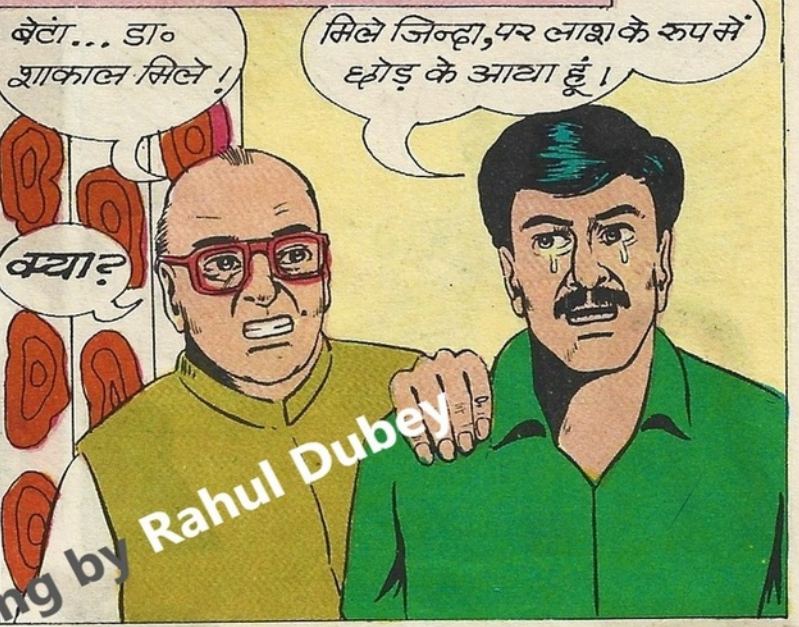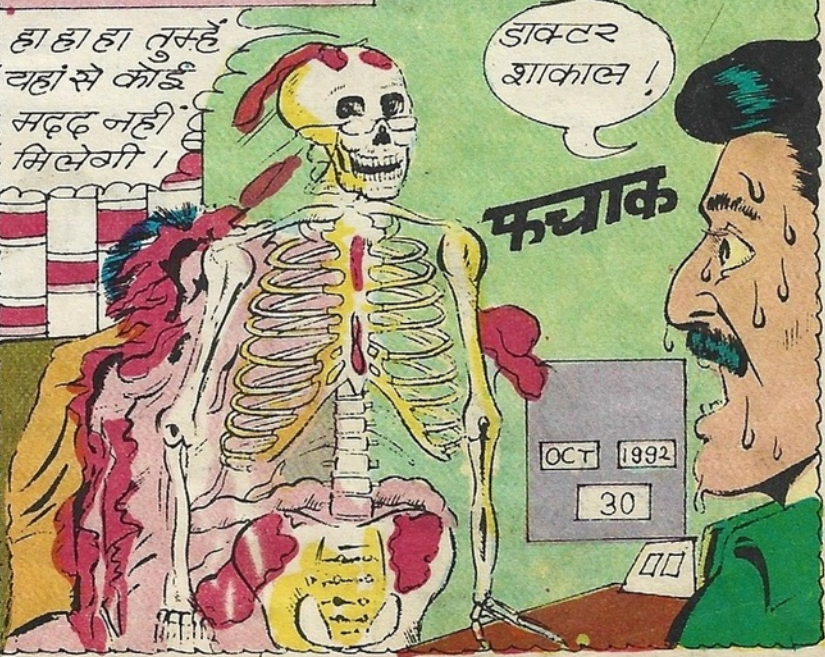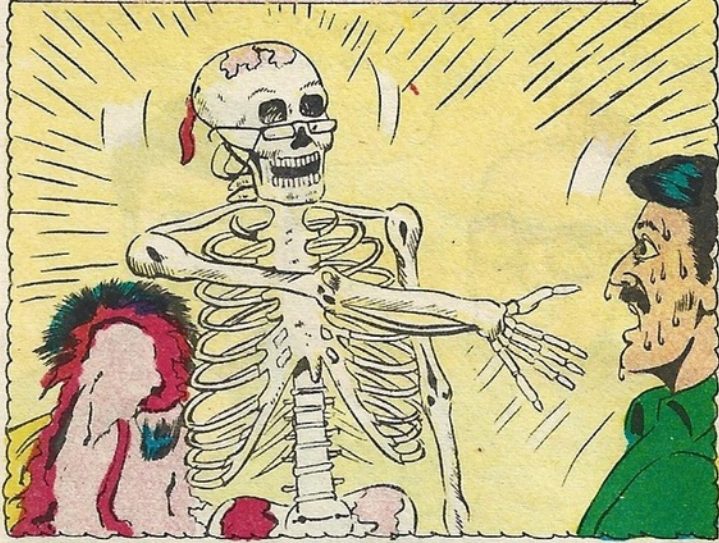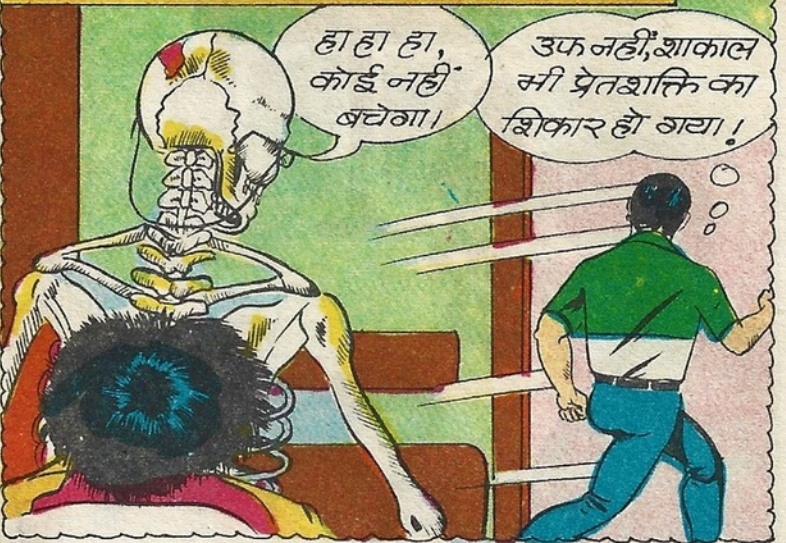
फिर सीधे यहीं आकर मैंने सांस ली!

हे भगवान!
वह आत्मा तो हिंसक हो गई है।

मुझे बहुत डर लग रहा है सॉब, ऐसा लगता है वह आत्मा मेरा भी ऐसाही हाल करेगी ... नहीं!
फुर्ती से धर्मपाल ने ई० के होलेस्टर से रिवाल्वर खींचा और -
... मैं ऐसी भयानक मौत मरने की अपेक्षा आत्महत्या करना पसंद करूंगा।
धर्मपाल
नहीं रुको!

जब तक अजीत उस पर झपटता उसने ट्रिगर दबा दिया!
ओह!
धांय
ओह नो!

अगले दिन-
सर आपकी जरा सी गलती ने इतने लोगों को मौत के घाट उतरवा दिया।
अजीत और बेटा अशोक अब यह सोचो कि उस प्रेतात्मा से छुटकारा कैसे पाया जाए!
धर्मपाल ने आत्महत्या कर ली!

अब एक ही उपाय है, अमर की लाश को प्राप्त करके उसे जला दिया जाए।
हां डैडी कहते हैं जब तक मृत व्यक्ति के शरीर का अंतिम संस्कार नहीं हो जाता .....

....उसकी आत्मा भटकती रहती है!
पर कब्रिस्तान में से लाश को निकालेंगे कैसे!
वह मुझ पर छोड़ दो... मैं जानता हूं किस कब्र में अमर की लाश होनी चाहिए।

कौन करेगा यह काम?
मैं और अशोक क्योंकि अगर हमने किसी को साथ लिया, तो गड़बड़ हो सकती है!

उसी रात...
कब्रिस्तान में...
वही कब्र है अशोक!

ढक्कन उठाओ ! अशोक !

पर ढक्कन उठाने से ही उनके दांतो तले पसीना आ गया !
उफ ! यह तो खुल ही नहीं रही ई० साहब !
अब क्या करें !

तभी दोनों उछल पड़े !
ई० कब्र अपने आप खुल गई !
खटाक
फौरन, इसमे पैट्रोल डालो !

अशोक पैट्रोल उड़ेलने लगा !
उफ ! कितनी भयंकर दुर्गन्ध आ रही है !

तभी दहशत से चीत्कार उठा अशोक !
ये ... ये क्या... ई० बचाओ ! मेरे शरीर में कोई घुस रहा है !

अगले पल-
ये..ये क्या कर रहे हो अशोक... मुझ पर पैट्रोल क्यों छिड़क रहे हो...!
हा हा हा... ई० मैं अशोक नहीं अमर हूं...अमर !

धाड़ धाड़ करता अजीत का दिल हलक में आ अटका !
त... तुम अमर हो... म... मुझे माफ कर दो अमर !

पूरे कब्रिस्तान को थर्रा कर रख दिया उसके ठहाके ने !
हा हा हा... ई० मैं भी इसी तरह जान की भीख मांग रहा था... ! पर तुमने मुझे नहीं छोड़ा, तो तुम्हें मैं कैसे छोड़ दूं ?
न... नहीं म... मैं तुझे गोली मार दूंगा दुष्ट आत्मा !
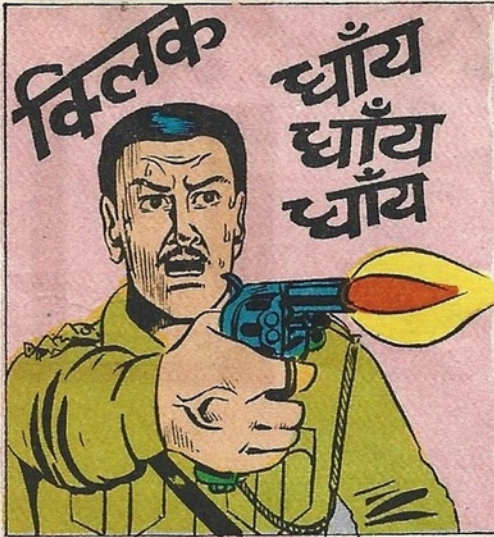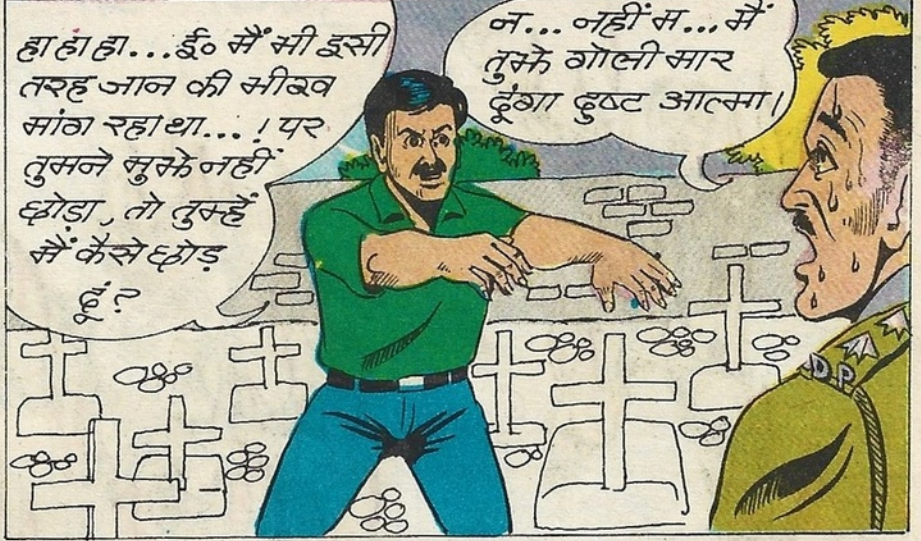
क्लिक
धाँय धाँय धाँय

अशोक के जिस्म के चीथड़े उड़ गए !
हा हा हा... मैंने आत्मा को मार दिया... मैंने अमर की आत्मा को मार दिया !
आऽऽऽ
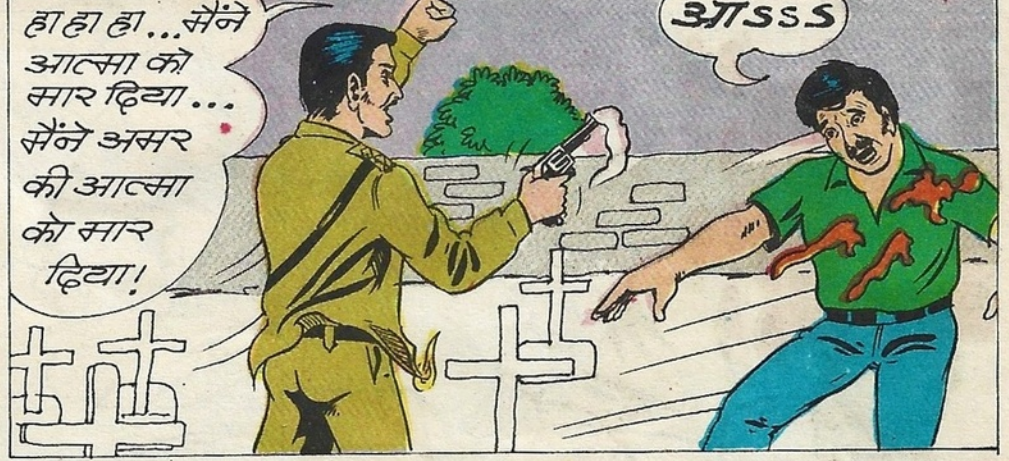
पर खुशी के आलम में वह यह भूल गया कि वह स्वयं भी पैट्रोल से सराबोर था... और गोली के शोलों की लपटें पैट्रोल पकड़ चुका था-
मैं... मैं जल रहा हूं...नहीं ऽऽऽ

बेतहाशा भागने लगा वह !
हा हा
हा
हा हा हा
नहीं... मैं मरना नहीं चाहता बचाओ... बचाओ !

Scan & editing by Rahul Dubey

क्या बात है?

मंत्री जी हम अपने गांव में अपने स्वर्गीय सरपंच की मुर्ति स्थापित करना चाहते हैं!

हम चाहते हैं कि उस मुर्ति का अनावरण आपके कर कमलों द्वारा हो!

ठीक है हम आ जाएंगे, समय क्या है!

आज शाम मंत्री जी!

जब सब चले गए!

सर... अभी आपके पुत्र का देहांत हुआ है, ऐसी अवस्था में आप...

पी॰ए॰ साहब, हम मंत्री हैं... और जनता को थोड़ा बहुत वक्त देने से कुछ घट तो नहीं जाएगा.... फिर जो होना था सो हो गया।

उसी शाम !

आइए मंत्रीजी !

रास्ता छोड़ो मंत्री जी के लिए!

यही हैं हमारे स्वर्गीय सरपंच राजबीर सिंह जी की प्रतिमा !

प्रतिमा अनावरण करने के लिए मंत्री के हाथ बढ़े !

तभी हवा का एक झोंका आया...

सर्ईऽऽ

?

फिर वह हुआ जिसकी आशा स्वयं मंत्री को भी न थी

प्रतिमा के हाथ हिल रहे हैं !

प्रतिमा नहीं यह मैं हूं... अमर !

अमर? !

प्रतिमा के हाथ मंत्री के कण्ठ पर कस गए!
न... ही... आह....
कसते गए...
आऽऽ ह!
और तब तक कसे रहे जब तक उनके हलक से आखिरी चीख न उबली!
आऽऽऽऽऽऽ
पर गांव वालों को यह सब न दिख पाया!
मंत्री जी गिर पड़े!
उठाओ, कोई उठाओ इन्हें!
धम्म
यह तो मर गए!
क्या?
सबके होंठों पर एक ही सवाल था।
आखिर मंत्री जी अचानक कैसे मरे!
क्या हुआ मंत्री जी को।
और वह जो कई हत्याओं का जिम्मेदार था!
आज मेरी आत्मा को शान्ति मिली है। मेरी प्रतिशोध की ज्वाला आज ठंडी हो गई!
Scan & editing by Rahul Dubey

समाप्त.

नीच इंसान ! सूर्यपुत्र के होते भारत का कोई सीक्रेट देश से बाहर नहीं जा सकता।
वाह! अपराधी कितना भी चालाक क्यों न हो, सूर्यपुत्र की पैनी नजरों से बच नहीं सकता।
KAMIOS
TANEJA
ASHOKA
BADAL BOOKS
ढिशुंम!
आह!
इन्सानियत का पुजारी – दुश्मनों का काल – अपराधियों की मौत।
आज ही पढ़ें। हर जगह उपलब्ध
पवन कॉमिक्स हर माह प्रस्तुत करते हैं – सुपर हीरो सूर्यपुत्र के रोमांचक कॉमिक...

पवन कॉमिक्स में

सुपर हीरो का

नया हाहाकारी कॉमिक्स

कांकुरा का आतंक

सूर्यपुत्र के अन्य प्रकाशित कॉमिक्स
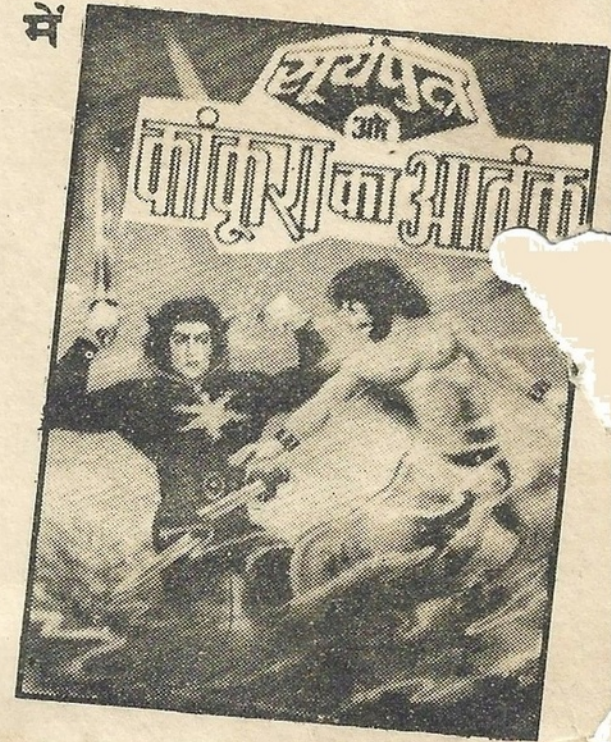
- ☐ सूर्यपुत्र
- ☐ सूर्यपुत्र और बौना राक्षस
- ☐ सूर्यपुत्र और सम्राट सामरी
- ☐ सूर्यपुत्र और पंचशूला
- ☐ सूर्यपुत्र और मौत की पुतली
- ☐ सूर्यपु[illegible] और फिरओन की आत्मा
- ☐ सूर्यपुत्र और श[illegible] का कहर
- ☐ सूर्यपुत्र और डॉन मस्त्रोना
- ☐ सूर्यपुत्र और खजूरा का जहर

अपने निकटतम बुक स्टाल से खरीदें

समस्त कापी राईट प्रकाशकाधीन

सम्पादक : देवकी नन्दन शर्मा

मुद्रक : जापान आर्ट प्रेस, नारायणा, दिल्ली-28

प्रकाशक :
पवन पॉकेट बुक्स
दाईवाड़ा, नई सड़क, दिल्ली-110006

पवन कॉमिक्स
प्रस्तुत करते हैं
सूर्यपुत्र
का नया रोमांचक कॉमिक्स
सूर्यपुत्र
और
कांकूरा का आतंक
64 रंगीन
पृष्ठो का
डायजेस्ट
प्रकाशक
पवन पॉकेट बुक्स
4537-दाईवाड़ा, नई सड़क, दिल्ली-110006
Scan & editing by Rahul Dubey